

इक मंदिर हनुमान विराजे
(सियारामा)

इक मंदिर में रामा-घनश्यामा-श्रीरामा

दूर-दूर बैठे हैं लेकिन, प्यार तो इनमें है ना

बोलो है ना- बोलो है ना

उब भी न समझा रे तू प्राणी

है सब उसकी माया ॥२॥

जिसने प्रभु के चरणों को पकड़ा

मिली है उनको हाया ॥२॥

प्रभु मेरे खामोश खड़े पर-बोल् रहे हैं नैना

बोलो है ना

इक मंदिर -----

हरि नाम का प्याला पी ले

और हो जा मतवाला ॥२॥

कभी न भूलो प्रभु चरणों को

है अमृत का प्याला ॥२॥

ये कायान मिले दुबारा, फिर भी तू चैते ना

बोलो है ना

इक मंदिर ----- ॥२॥

तू मतवाला बना रहा पर

भूल न पाया माया ॥२॥

कितने पुण्य किये जब तूने

मिली ये निर्मल काया ॥२॥

बार-बार तू सोच ले प्राणी-फिर बोलो सच है ना
बोलो है ना

इक मंदिर-----

गढ़-गढ़ तूने महल बनाये

नाना भौत सजाये ॥२॥

सब कुढ़ दूट जायेगा तेरा

कहु संग न जाये ॥२॥

कहेत श्रीबाबाश्री सुनो सब साथी

बोल लो मीठे बैना

बोलो है ना

इक मंदिर-----